औद्योगिक प्रबन्ध

Manohar Memorial College
LIBRARY
Accession No. 2047
Classification ....
FATEH BAD (HISSAR)

यदु कुल भूषण, एम० कॉम० (दिल्ली),
एम० बी० ए० (अमरीका)
आचार्य, वैकुण्ठ मेहता नेशनल इंस्टीट्यूट
ऑफ कोआपरेटिव मैनेजमैंट, पूना
भूतपूर्व वरिष्ठ प्राध्यापक, श्रीराम कॉलेज
ऑफ कॉमर्स (दिल्ली विश्वविद्यालय), दिल्ली

ओम प्रकाश अग्रवाल,
एम० कॉम० (दिल्ली)
प्राध्यापक, राजधानी कॉलेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय),
नई दिल्ली

2047

प्रथम संस्करण

1972

सुल्तान चन्द एण्ड सन्स

विषय-सूची

प्रथम भाग

संगठन एवं वित्त

खण्ड एक	आधुनिक व्यावसायिक संगठन का विषय-प्रवेश	1—136

1. **व्यवसाय—प्रकृति एवं उद्देश्य** 1—38

व्यवसाय का अर्थ 1, व्यावसायिक क्रियाओं के भेद 3, प्रकृति 7, उद्देश्य 11, व्यवसाय-संगठन 16, संगठन के चरण 17, अर्थ तथा विषय क्षेत्र 17, महत्त्व 18, आवश्यक तत्त्व 19, अच्छे व्यवसायी के गुण 22, शिक्षा तथा प्रशिक्षण 24, ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि 27, औद्योगिक क्रान्ति 30, सारांश 34.

2. **एकल स्वामित्व एवं संयुक्त हिन्दू-परिवार संगठन** 39—52

एकल स्वामित्व 39, मूल्यांकन 41, सामाजिक महत्त्व 42, संगठन में विस्तार की समस्या 45, संयुक्त हिन्दू-परिवार संगठन 48, सारांश 50.

3. **साझेदारी संगठन** 53—81

साझेदारी और संयुक्त हिन्दू परिवार फर्म में भेद 55, सह-स्वामित्व में भेद 57, भेद 58, सीमित साझेदारी 60, आदर्श साझेदारी 61, साझेदारी-पत्र 64, रजिस्टर कराना 65, अधिकार और कर्त्तव्य 67, दायित्व 68, साझेदारी का विघटन 70, मूल्यांकन 73, क्षेत्र 75, सारांश 76.

4. **कम्पनी संगठन** 82—101

परिभाषा और लक्षण 82, कम्पनी और साझेदारी में भेद 85, कम्पनियों के प्रकार 86, निजी कम्पनी 88, कम्पनी संगठन का मूल्यांकन 92, सारांश 98.

5. **सहकारिता संगठन** 102—116

अर्थ 102, सहकारी समिति व कम्पनी में अन्तर 105, स्थापना 107, संगठन, 109, भेद 110, मूल्यांकन 112, सारांश 114.

6. **व्यावसायिक संगठन के स्वरूप का चुनाव** 117—135

व्यवसाय संगठन के आदर्श रूप के लक्षण 117, मूल्यांकन, 119, स्वरूप का चुनाव 125, उपयुक्त संगठन के स्वरूप 129, सारांश 132.

खण्ड दो — कम्पनी का प्रवर्तन एवं प्रबन्ध — 137—222

7. कम्पनी का प्रवर्तन — 139—164

प्रवर्तकों का महत्व 141, प्रवर्तन की अवस्थाएँ 142, संयुक्त पूँजी कम्पनी का प्रवर्तन 144, प्रारम्भिक कार्यवाही 144, समामेलन की कार्यवाही 145, व्यवसाय प्रारम्भ करने की कार्यवाही 146, संस्था के सीमानियम 148, महत्व 150, संशोधन 150, संस्था के अन्तर्नियम 151, सीमानियम और अन्तर्नियम में भेद 152, प्रविवरण 153, सूक्ष्म अध्ययन 156, गलत सूचना देने के परिणाम 158, सारांश 160.

8. कम्पनी प्रबन्ध—शेयरधारी तथा संचालक-मंडल — 165—195

सामान्य रूपरेखा 165, शेयरधारी या अंशधारी 166, कम्पनी प्रबन्ध में अल्पतन्त्रता 168, कम्पनी प्रबन्ध का जनतन्त्रीकरण 172, संचालक-मण्डल का गठन 177, अधिकार व कर्त्तव्य 179, उपयुक्त संरचना 185, वैधानिक प्रतिबन्ध 187, पारिश्रमिक 189, पदच्युति तथा योग्यताएँ 190, सारांश 191.

9. कम्पनी का कार्यकारी प्रबन्ध—प्रबन्ध संचालक, प्रबन्धक तथा प्रबन्ध एजेन्ट — 196—222

मुख्य कार्यकारी अधिकारी 196, प्रबन्ध संचालक 199, अधिकार और कर्त्तव्य 201, प्रबन्धक 202, प्रबन्ध एजेन्ट या प्रबन्ध अभिकर्त्ता 206, प्रबन्ध एजेन्सी प्रणाली की पृष्ठ-भूमि 206, प्रबन्ध एजेन्टों के कार्य 207, दोष एवं बुराइयाँ 210, प्रतिबन्ध 211, प्रबन्ध एजेन्सी जाँच समिति 212, कम्पनी (संशोधन) अधिनियम, 1969, 216, सचिव व कोषाध्यक्ष 217, प्रबन्ध के ढाँचे में नये परिवर्तन 218, सारांश 219.

खण्ड तीन — नये व्यावसायिक संस्थान की समस्याएँ — 223—350

10. नये व्यवसाय की स्थापना तथा आकार का निर्णय — 225—254

वस्तु विश्लेषण तथा बाजार सर्वेक्षण 225, आकार निर्धारण 226, संयंत्र सुविधायें 227, वित्तीय योजना 228, संगठन ढाँचे की रचना 228, व्यवसाय आरम्भ 229, व्यवसाय का आकार 229, आकार मापने की विधियाँ 231, विशाल आकार की प्रवृत्ति तथा इसके लाभ 232, बड़ी फर्मों के दोष 236, छोटे आकार की फर्म की लोकप्रियता के कारण 238, अनुकूलतम आकार 239, विभिन्न तत्वों में सन्तुलन 246, प्रतिनिधि फर्म 243, साम्य फर्म 248, आन्तरिक तथा बाह्य किफायतें 249, सारांश 250.

11. व्यवसाय-स्थल का चुनाव — 255—279

व्यवसाय-स्थल चुनाव के सिद्धान्त 255, वेबर का सिद्धान्त 256, पलोरेन्स का सिद्धान्त 259, व्यवसाय-स्थल निर्धारित करने वाले तत्व 261, एक निर्दिष्ट स्थान का चुनाव 268, अनुकूलतम व्यवसाय स्थल का निर्धारण 269, भारत में औद्योगिक स्थानीयकरण 270, सारांश 275.

12. संयंत्र विन्यास तथा कार्य-अध्ययन — 280—328

उद्देश्य 281, लाभ 281, निर्धारक तत्व 282, विन्यास या ले-आउट की योजनायें 283, रेखा या उत्पाद विन्यास 283, क्रियात्मक या प्रविधि विन्यास 285, मिश्रित विन्यास 288, नये कारखाने के ले-आउट आयोजन की समस्या 289, कारखाने की इमारत 290, कार्य सुधार 292, अर्थ 292, प्रणालियाँ 295, प्रक्रिया विश्लेषण 295, क्रिया विश्लेषण 302, गति या मुद्रा अध्ययन 303, मानवी आवश्यकतानुकूल इन्जीनियरिंग 308, कार्यमापन 310, उद्देश्य 312, लाभ 319, कार्यमापन की सीमाएँ 320, सारांश 321.

13. उत्पादकता या उत्पादिता — 329—350

उत्पादकता की अवधारणा 329, उत्पादकता का मापन 333, उत्पादिता को प्रभावित करने वाले तत्व 337, औद्योगिक विकास 338, कर्मचारियों के काम का स्तर 339, महत्व 342 उत्पादकता आन्दोलन 344, निम्न उत्पादिकता के कारण 345, सारांश 347.

खण्ड चार — वित्तीय संगठन एवं प्रबन्ध — 351—524

14. वित्तीय आयोजन — 353—382

आवश्यकता 353, अभिप्राय 354, उद्देश्य 355, निर्णायक तत्व 355, पूँजीकरण 357, अति-पूँजीकरण 359, अव-पूँजीकरण 364, पूँजी की आवश्यकताओं का अनुमान 366, स्थायी पूँजी 367, कार्यशील पूँजी 368, पूँजी संरचना, 371, उपयुक्त पूँजी-मिलान में ध्यान देने योग्य विचार 372, पूँजी एकत्रित करने का समय 376, सारांश 377.

15. वित्तीय स्रोत — 383—422

शेयर अथवा अंश 384, पूर्वाधिकारी शेयर 385, इक्विटी या सामान्य शेयर 387, दोनों में अन्तर 389, डिबेंचर 390, सिक्योरिटियों को जारी करने के तरीके 395, विक्रय की विधियाँ 396, अभिगोपन 397, औद्योगिक वित्त संस्थायें 400, वाणिज्यिक बैंकों से ऋण 402, बैंकों द्वारा औद्योगिक वित्त की उपेक्षा के कारण 403, प्रबन्ध

एजेन्ट 406, सार्वजनिक जमा 408, अर्जित लाभों का पुनर्विनियोजन 411, व्यावसायिक पूँजी और वित्तीय स्रोत 414, सारांश 415.

16. **आय का प्रबन्ध** 423—441
अर्थ 423, आय के निर्धारण की समस्या 424, ह्रास 428, आय के बँटवारे की समस्या 432, लाभांश की नीति 432, लाभों के संचय की नीति 435, सारांश 437.

17. **औद्योगिक वित्त संस्थाएँ** 442—482
विनियोग ट्रस्ट 442, यूनिट ट्रस्ट ऑफ इन्डिया या भारतीय इकाई प्रन्यास 445, जीवन बीमा निगम तथा अन्य बीमा कम्पनियाँ 450, औद्योगिक वित्त संस्थाएँ—औद्योगिक विकास बैंक 452, भारतीय औद्योगिक वित्त निगम 457, राज्य वित्त निगम 462, भारतीय औद्योगिक साख तथा विनियोग निगम 466, राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम 469, निष्कर्ष 470, राजकीय सहायता 471, नयी प्रवृत्तियाँ 472, सारांश 474.

18. **शेयर बाजार या स्कन्ध विपणि** 483—524
अर्थ 483, महत्त्व 484, आर्थिक कार्य 485, उपयोगिता 488, उद्गम तथा विकास 489, संगठन 490, सदस्यों का वर्गीकरण—दलाल या जॉबर 491, सूचियन 492, सट्टा या परिकल्पना 493, सौदे करने का तरीका 503, मूल्यों में उतार-चढ़ाव के कारण 508, नियन्त्रण 513, सारांश 517.

द्वितीय भाग

प्रबन्ध एवं प्रशासन

खण्ड पाँच — प्रबन्ध—प्रकृति एवं सिद्धान्त — *493—652

19. **प्रबन्ध की प्रकृति एवं कार्य** 493—524
प्रबन्ध की प्रक्रिया 493,* अर्थ 494, प्रबन्ध और प्रशासन 495, प्रबन्ध और संगठन 497, प्रबन्ध की प्रकृति 497, आधुनिक प्रबन्ध सिद्धान्तों का विकास 501, प्रबन्ध के कार्य 509, समन्वय 515, सारांश 519.

20. **वैज्ञानिक प्रबन्ध** 525—550
अर्थ 525, सिद्धान्त 527, अनिवार्य तत्व 527, लाभ 536, आलोचना 538, भारत में वैज्ञानिक प्रबन्ध 544, सारांश 546.

21. **नियोजन एवं पूर्वानुमान** 551—578
नियोजन—अर्थ 551, प्रकृति 551, योजनाओं के भेद 553, योजनाओं का एकीकरण 559, नियोजन का महत्त्व 560, नियोजन की

* प्रथम भाग पृष्ठ 524 पर समाप्त होता है। उसके पश्चात् द्वितीय भाग पृष्ठ 493 (अध्याय 19) से फिर आरम्भ होता है।

अवस्थायें 561।
पूर्वानुमान—अर्थ 563, महत्त्व 564, सीमायें 565, आवश्यक तत्व 566, आवश्यक व्यवस्था 566, भेद 568, विधियाँ 569, विक्रय पूर्वानुमान की प्रणालियाँ 572, सारांश 573.

22. **संगठन—सिद्धान्त एवं रूप** 579—603
अर्थ 579, प्रक्रिया रूप में 579, ढाँचे के रूप में 580, महत्त्व 581, सिद्धान्त 581, विभागीयकरण 583, आधार 584, संगठन के रूप 585, लाइन संगठन 586, कार्यात्मक संगठन 590, शीर्ष तथा समानान्तर रेखा संगठन 592, अधिकार सौंपना 595, नियन्त्रण-क्षमता की सीमा 597, विकेन्द्रीयकरण 598, सारांश 599।

23. **नियुक्तियाँ तथा निर्देशन** 604—621
नियुक्तियाँ—अर्थ 604, प्रकृति 604, अवस्थायें 605, निर्देशन—अर्थ 607, प्रकृति 607, सिद्धान्त 608, विधियाँ 609, मुख्य तत्व 609, नेतृत्व 610, सम्प्रेषण 611, अभिप्रेरण 616, सारांश 618.

24. **नियन्त्रण की प्रक्रिया और इसकी प्रणालियाँ** 622—652
नियन्त्रण की प्रक्रिया 622, नियन्त्रण की प्रणालियाँ 624, बजटीय नियन्त्रण 624, लागत नियन्त्रण 632, उत्पादन नियन्त्रण 640, किस्म या गुण नियन्त्रण 645, सारांश 647.

खण्ड छः — कर्मचारी प्रबन्ध — 653—766

25. **कर्मचारी प्रबन्ध—चुनाव, नियुक्ति एवं प्रशिक्षण** 655—694
अर्थ 655, महत्त्व 656, कार्य 657, कर्मचारियों की अधिप्राप्ति—भरती 658, कर्मचारियों का चुनाव 665, कार्य पर नियुक्ति 671, कर्मचारियों का विकास 672, प्रशिक्षण 673, पदोन्नति तथा स्थानान्तर 678, योग्यता अंकन 682, कार्य मूल्यांकन 684, सारांश 688.

26. **कर्मचारियों का पारिश्रमिक/मजदूरी देने की प्रणालियाँ** 695—720
मजदूरी को प्रभावित करने वाले तत्व 695, प्रणालियाँ—समय के अनुसार मजदूरी 696, प्रति इकाई उत्पादन के अनुसार मजदूरी 699, प्रेरणात्मक प्रणालियाँ 701, लाभ विभाजन योजना 710, सारांश 715.

27. **औद्योगिक सम्बन्ध एवं श्रम-कल्याण** 721—765
एकीकरण और अनुरक्षण कार्य—औद्योगिक सम्बन्ध 721, औद्योगिक मनोविज्ञान 722, व्यावसायिक चुनाव 723, व्यावसायिक पथ प्रदर्शन 724, व्यावसायिक प्रशिक्षण 725, औद्योगिक मनोविज्ञान 730,

औद्योगिक संघर्ष 733, श्रम संघ 740, सामूहिक समझौते 746, प्रबन्ध में श्रमिकों की भागीदारी 747, श्रम कल्याण 752, सारांश 759.

खण्ड सात — विपणन — 767—1004

28. विपणन कार्य — 769—807

अर्थ 769, कार्य 769, क्रम एवं एकत्रीकरण 770, विक्रय 772, विपणन गवेषणा 773, मूल्य निर्धारण 784, परिवहन 790, संग्रहण 790, वित्त प्रबन्ध 793, उधार व वसूली 794, प्रमापीकरण 796, पैकिंग व पैकेजिंग 800, जोखिम उठाना 801, सारांश 802.

29. बीमा एवं परिवहन — 808—849

बीमा—अर्थ एवं प्रकृति 808, लाभ 809, सिद्धान्त 810, भेद 815, जीवन बीमा 816, अग्नि बीमा 820, सामुद्रिक बीमा 822, विविध बीमे 827.

परिवहन—लाभ 829, परिवहन के साधन 832, भाड़ा-नीति 839, रेल-सड़क प्रतियोगिता 841, सारांश 844.

30. वितरण के माध्यम—मध्यस्थ — 850—912

मध्यस्थ—व्यापारिक एजेन्ट 851, व्यापारी मध्यस्थ 853, थोक विक्रेता 853, फुटकर व्यापारी 864, विभागीय भंडार 871, बहुसंख्यक दुकानें 878, डाक आदेश गृह 886, उपभोक्ता सहकारी भंडार 890, सुपर बाजार 893, क्रयावक्रय व्यापार 896, वितरण के उपयुक्त माध्यम का चुनाव 900, मध्यस्थों का उन्मूलन 902, सारांश 904.

31. उभज विनिमय बाजार — 913—923

अर्थ 913, उपयुक्त वस्तुयें 913, कार्य व उद्देश्य 914, सेवायें 915, सौदे की विधि 916, सुरक्षात्मक सौदे 918, सारांश 922.

32. विदेश व्यापार — 924—941

अर्थ 924, समस्यायें 924, आयात कार्यविधि 925, निर्यात कार्य-विधि 931, सारांश 939.

33. विक्रयकला एवं विज्ञापन — 942—1004

अर्थ 942, महत्त्व 944, विक्रयकर्त्ताओं के भेद 945, विक्रयकला में सफलता के सिद्धान्त व तत्व 947, सफल विक्रयकर्त्ता के वैयक्तिक गुण 954, प्रभावपूर्ण विक्रय की अवस्थायें 959, पारिश्रमिक की विधियाँ 962, विज्ञापन—अर्थ 965, उद्देश्य 966, कार्य 968, विज्ञापन और विक्रयकला 968, महत्त्व 969, वैज्ञानिक विज्ञापन 976, विज्ञापन प्रतिलिपि 979, विज्ञापन के माध्यम 985, सापेक्षिक मूल्यांकन 995, सारांश 998.

खण्ड आठ — व्यवसाय एवं बाह्य जगत — 1005—1146

34. विवेकीकरण — 1007—1027

अर्थ 1007, उद्देश्य 1009, मुख्य लक्षण 1010, विवेकीकरण और वैज्ञानिक प्रबन्ध 1012, विवेकीकरण के लाभ 1014, आलोचना 1016, भारत में विवेकीकरण 1020, सारांश 1024.

35. व्यावसायिक संयोजन — 1028—1101

अर्थ 1028, कारण 1028, प्रकार 1032, स्वरूप 1040, कुछ अन्तर 1072, लाभ और हानि 1076, एकाधिकार नियन्त्रण 1081, एकाधिकार नियन्त्रण अधिनियम 1085, भारत में संयोजन आन्दोलन 1089, सारांश 1091.

36. राज्य और उद्योग — 1102—1132

आवश्यकता 1102, औद्योगिक नीति 1102, लाइसेन्स नीति 1110, राष्ट्रीयकरण 1113, राजकीय उद्यमों का संगठन 1116, राज्य उपक्रमों के प्रशासन की समस्यायें 1124, सारांश 1127.

परिशिष्ट—स्वचलन और बेरोजगारी — 1133—1146

अर्थ 1133, लक्षण 1134, मशीनीकरण और स्वचलन 1135, स्वचलन और विवेकीकरण 1135, स्वचलन और कम्प्यूटर 1135, लाभ 1136, दोष 1137, स्वचलन और बेरोजगारी 1138, स्वचलन की उपयुक्त परिस्थितियाँ 1141, भारत में स्वचलन और बेरोजगारी 1142, भारत सरकार की नीति 1143.